[स्नातक द्वितीय वर्ग के लिए
सहायक पाठ्य सामग्री]

डॉ० सुजाता गुप्ता
अतिथि शिक्षक, हिंदी विभाग
जगदीश नन्दन महाविद्यालय
मधुबनी-847211

प्र० 'ले चल मुझे भुलावा देकर' शीर्षक कविता का भाव स्पष्ट करें।

उत्तर→ 'ले चल मुझे भुलावा देकर' शीर्षक गीत छायावाद चतुष्टय की अग्रणी एवं प्रतिभा संपन्न कवि प्रसाद की एक आत्मपरक रचना है। प्रस्तुत 'लहर' काव्य-संग्रह के गीत में कवि ने सांसारिक हलचल और कोलाहल से दूर प्रकृति की शांत एकांत गोद में ले चलने के लिए परोक्ष सत्ता से आत्मनिवेदन किया है।

विवेच्य गीत में कवि ने मानस जगत में उत्पन्न होनेवाली विभिन्न भाव लहरियों को रूपायित किया है। इस गीत के चार भावचित्रों में कवि की सुकोमल भावनाओं की मनोरंजक अभिव्यक्ति हुई है।

प्रसाद जी मूलत: प्रकृति प्रेम और सौन्दर्य के गायक कवि रहे हैं। सांसारिक जीवन में कवि ने प्रेम के क्षेत्र में भी कपटता और गोपनीयता का अनुभव किया है। यही कारण है कि वह परोक्षसत्ता उस शांत-एकांत प्रदेश में ले चलने का निवेदन करता है, जहां सागर की लहरें कल-कल ध्वनियों के बीच अंबर के कानों में अपनी निश्छंद प्रेम कथा सुनाती रहती हैं। तात्पर्य यह है कि वहाँ किसी प्रकार का दुराव-छिपाव नहीं रहता है।

कवि की इच्छा है कि परोक्ष सत्ता उसे ऐसी जगह पर पहुँचा दे कि वे जहाँ साँझ अपनी कोमलता के साथ जीवन पर छाया प्रदान करती है। आकाश रूपी नीली आँखों में तारिकाओं की मनोहर पंक्ति झलकती रहती है। तात्पर्य यह है कि जहाँ साँझ को अपनी व्यथा प्रकट करने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त रहती है। तल्लीन भाव चित्र में कवि ने परोक्ष सत्ता को उस-

Scanned with CamScanner

स्थान पर ले जाने का आग्रह किया है, जहाँ संसार की समस्त चंचल और तल्लीन विभु की गंभीर मधुर छाया में विभाजित दिखाई पड़ता है। यहाँ सत्य का साक्षात्कार होता है। अंतिम भाव चित्र में सौंदर्य अभिलाषी कवि प्रसाद स्वयं को परोक्ष सत्ता से उस स्थान पर ले जाने का निवेदन करते हैं, जहाँ तम विश्राम करती है और उषा अपनी आँखों से संपूर्ण पृथ्वी पर सुनहली किरणें बिखेर करती है।

इस प्रकार इस कविता में कविवर प्रसाद जी का निवेदन है कि परोक्ष सत्ता उसे ऐसी जगह पहुँचा दे, जहाँ उसे सांसारिक हलचल कोलाहल से शांति मिल सके। प्रकृति की शांत-एकांत गोद में अपने दुख-दर्द को विस्मृत कर पुनः आनंद का अनुभव कर सके।

डॉ० सुजाता गुप्ता
अतिथि शिक्षक, हिंदी विभाग
जगदीश नन्दन महाविद्यालय
मधुबनी - 847211

Scanned with CamScanner